इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ धुळे.

—: हस्त लिखित ग्रंथ सं[illegible]

ग्रंथ क्रमांक ५१६।५ १२[illegible] २७

ग्रंथ नाम समर्थाची [illegible]कें.

विषय मराठी काव्य.

" Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yeshwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai. "

रामदासी

मराठी

५१६।५११२२० बाड – कराड – काशीनाथ वासुदेव देव

समर्थांची शतकें.

" Joint project of the Rajwade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai."

(1)

॥ रघु हुयाल माना ॥ ६५ ॥ आजयो
॥ नको रे जयवंत होरे ॥ आपदान को
॥ रे बहु भाग्य होरे ॥ श्रीमंत कारि जन
॥ हित कारि ॥ परोपकारि हरिदासना
॥ रि ॥ ६६ ॥ भीमभयानक तो सिकला
॥ वि ॥ मउ कळांस कळा मउ काविन
॥ चरलरु वरते कउ काविन बद्धक
॥ ठास कठाघउ कावि ॥ ६७ ॥ सब
॥ ळे रजनिचर मारि ॥ सगळ बांध
॥ लपुच्छ उभारे ॥ रउल बांवलि तिवि
॥ रसारे ॥ न दिसतो चि बघे प्रभु कोर
॥ ६८ ॥ जळतसे त्रिकुठाचळ लंका ॥
॥ धरितसे रजनिचर शंका ॥ तुम
॥ जर्ता नुमसे व[illegible] भाव चिता
॥ वुउ विसक[illegible] रितका क
बरादि ताह[illegible] धा विधान
॥ विर्घा मगप[illegible] मरतझण
॥ ती बीर आला ॥ नि वल हे तपुरला
॥ सकळाला ॥ ७० ॥ चिपो लचाली
॥ फाजनिघवली ॥ हो पंथ लतो उतरा
॥ वी वली ॥ नेणं आपुतो समजेल पु
॥ लो ॥ आहे तघु ती वच निमधु ती ॥
॥ ७१ ॥ घमो पती मानि सुरसा पी मानि ॥
॥ केचल दानि धगढे निदानि ॥ रघो
॥ त मानि जगदोल मानि ॥ उन्मे त
॥ मानि वधिले गुमानि ॥ ७२ ॥ मो ठ्या
॥ बळाचा बहुतार ख्याचा ॥ नाना
॥ कळांचा वरतो रवळाचा ॥ ठंप त
॥ र पिल्लाचा धीर कुकिचा ॥ नाना ठिक
॥ कुकिचा कपटि कुकिचा ॥ ७३ ॥
॥ देवें प्रभु पावे सुरत्नो कपाळें ॥ के
॥ तिदयाळें उजळे कपाळें ॥ तु

" Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai. "

॥ द्विदकाळें रमणियसाळें ॥ पंदि
॥ सुकाळे सुरनाथ पाळें ॥ ७४ ॥ लो
॥ चाळवीतो मन घाळविलो ॥ भ्रमं
॥ द्वीतो सुख पावविलो ॥ लवाळ
॥ वीतो क्षीण माळवीतो ॥ द्रुपाळवि
॥ तो करितो कविलो ॥ ७५ ॥ कुउपंथ
॥ कळोनि पुढें चिकडा ॥ वरि घालि
॥ तसे उगले चिखडा ॥ बहुत कटि
॥ ण शब्द घडा विघडा ॥ खळपुं कतं
॥ ज्ञातसे जसा गघडा ॥ ७६ ॥ मंजु
॥ ळतो कोकिळ कोकिळ बोले ॥ स
॥ ज्जन ते जन मस्तक डोले ॥ उत्तम
॥ देखत हें मन तोलें ॥ कां कुरदेज
॥ न बेसत बोलें ॥ ७७ ॥ रठित मठि
॥ खठित रपडा ॥ [illegible] प[illegible]चवताळ
॥ लरे आ॥ स[illegible] खळदुर्जे न
॥ [illegible]तडा ॥ [illegible] ठिपवदेनर
॥ वडा ॥ ७८ ॥ तो शुक कौतुक बो
॥ लत आहे ॥ ऐकत मानव चकित
॥ राहे ॥ उत्तम गुण कदापि न राहे
॥ ते जन सज्जन शोधुन पाहे ॥ ७९
॥ रागिट स्वान निरंतर कुंके ॥ स
॥ ज्जन हो जन हो परि थुंके ॥ लाळचि
॥ ळे शरयावरि घीके ॥ लटरपुठ
॥ ल उवड मुकें ॥ ८० ॥ संगित रंगप
॥ सेम —

Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

॥ग बळावे॥ गायनमाननिरंतर
॥कावे॥ज्यो तर हेत सुखे चिसुखा
॥वे॥ पुष्पतरुवरिजिवनधावे॥
॥८१॥ धीकिट धीकिट बिकीठला
॥ळे॥ थोंगत थोगमृदांग उफाळे॥
॥ बंद्रथबंध सुधारस दाळे॥ गाय
॥ नरंगप्रसंग सुकाळे॥८२॥ तंन
॥ चणचण उंचचणाणि॥ मद्रझण
॥झण संचझणाणि॥ दृंगमृदंग खि
॥ कठदणाणि॥ संगित ताल क
॥ लोळखणाणि॥ ८३॥ मत्त जन
॥ येकनेमक तारि॥ उल्लस कित
॥ नृदंउ सरारि॥ प्रेमळ नाम तुका
॥ नमरारि॥ राम उपासक रंगक
॥ रारि॥८ ... नाम जना
॥ मुळ ... नचि त
॥ नि वाले॥ की ... ध्यान विभाग
॥ तव्या ले॥ ... य साधिक
॥ झाले॥८५॥ मिनव्या मिननमि
॥ नममाला॥ मानत मानमनासु
॥ मनाला॥ सानसमान मनेमन
॥ घाला॥ मोकुन लोमन तेचिन
॥ घाला॥८६॥ चाढचराठमठा
॥ टचि बोले॥ बोलत बोल तोल त
॥ तोले॥ रंगमति चुंमति पनहा
॥ ले॥ मेरमति समति वर बोले॥
॥८७॥ निरंजन भार समार सु
॥ मारे॥ उल्हार मारित सेवरवा
॥ रै॥ लोलत जालसरोवरसा
॥ रे॥ रंग सुरंग बहु सुखकार॥
॥८८॥ दहु रुपामर तेवर बोले॥ सं
॥ मपराग सिघेउ नगले॥ कोकिळ

Joint project of the Rajwade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

(५)

॥ बोलत चकित झालें ॥ उलम
॥ गुण गुणिच निवाले ॥ ९ ॥ प्र
॥ सये ज्ञान न व्हे आनुमाने ॥ चा
॥ लेल पंथक सा आडराने ॥ तो
॥ लति ठोंक बहुत गुमाने ॥ हंस
॥ जनिक ळलि पय पाने ॥ १० ॥ क
॥ ठक कठ कंटेंक टकाठि ॥ का
॥ ठि ठ ला ठि ल त्ला त्ला ठि त ला
॥ ठि ॥ ला ठि त तो पर ज्ञा रला
॥ डा ठि ॥ आ ठि न दा ठि ल दा ठि
॥ लआ ठि ॥ ११ ॥ चकसे रघ सरे
॥ सुर कोपि ॥ संगीन मानच राच
॥ र कापि ॥ पर विर भार बहुतचि
॥ दापि ॥ रिपु च[illegible] बहुत यता र
॥ पि ॥ १२ ॥ म[illegible]डरें डविजा
॥ ला ॥ अ[illegible] विरं विर भा
॥ ला ॥ धोर रि[illegible]मार निघाल
॥ किर्ति प्रल[illegible]चि जाली ॥
॥ १३ ॥ घोर कठोर सु मंडळ धा
॥ के ॥ रोश मनि धन घोश लडाखे
॥ काण दुजा रण मंडळ राखे ॥ का
॥ ळच पेठ लपेटुन धाके ॥ १४ ॥ ब
॥ ळें बळे तेचि रवळ बळ जाल्हि ॥
॥ पुष्परणा तु ळ णाची उडाल्हिं ॥
॥ वंदि विमोचन तो मन घाली ॥
॥ उ[illegible]हा कि र्तिस मुछ नि घाल्हि ॥
॥ १५ ॥ परम सुंदर रूप शामळा ॥
॥ इंद्र निळ कि ळ कांति कोमळ ॥ श
॥ य निवारण भक्त वछला ॥ वरप
॥ राक्रम कीर्ति विमळा ॥ १६ ॥ मु
॥ चन कंठ कदे समारक ॥ आम
॥ र मोचन दैस हारका ॥ दुरितना

"Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai."

।।शन पुण्य कारक।। हरिल संकठ
।।दास तारक।।१७।। विकट विश
।।म ताळळे दुक।। बरमाना बर
।।दै तमेदुक।। दुश मुखोल कसि
।।रछे दुक।। रुषि मुनि जन चित्तव
।।धक।।१८।। आमर भुवन तुल
।।मोलम।। भुवन पाळक हार घो
।।लम।। विर विरोल कहा विरो ल
।।म।। आसुवो लक हार घो लम।।
।।१९।। बहुल पिडक दैत्य भंजन।।
।।रुषि मुनि जेन योगि निरंजन।।
।।दुरित दान व दुष्ट गंजन।। आ
।।तुळ कितित [illegible] व्यजन।।२०।।
।।दुःख हरक [illegible] कर।।शोक
।।परि हर [illegible] र।। काळ कु
।।ठ घर त पुर [illegible]।। परम सुर
।।र चे दुश [illegible] चे पर तर हा
।।परा पर।। विभु विधु शार ला फणि
।।वर।। दास हित कर लो दिगं ब
।।र।। गंग गजळ धर लो ळ ढाधर।।
।।र।। आल ळ चित ळ ले लळा ल ळ।।
।।सु ल ळ मुल ळ हा रसाल ळ।। गग
।।न मंडळ इंदु मंडळ।। पवन मं
।।डळ मेघ मंडळ।।२१।। गुप चंच
।।ळ दैव चंचळ चंच।। सर्व चंचळ लो
।।चि केवळ।। काळ पळ पळ हा सु
।।फळ।। आमळ विमळ मृदु कोम
।।ळ।।२२।। होल करकर चित विक
।।रै।। जीव खर खर जे विलो खर।।
।।फार तर तर नेण ति हनर।। हो
।।य फर फर जाल से नर।।२३।।

(6)

॥ उ मि उ मि सर्व दां हे चि उ मि ॥ धु
॥ मि धु मि द्वा ठ लि सर्व धु मि ॥ पु
॥ मि पु मि निश्चयो हा चि पु मि ॥ सु
॥ मि सु मि लो लण मि च सु मि ॥ ६॥
॥ कलो कलो वा ळ स्वा द व कली ॥
॥ गर्ली गर्ली चुकवि वा जन्म गर्ली
॥ तली तली वेग ळा पंथ तली ॥ प
॥ ली पली साधनसि धवली ॥ ७॥
॥ कर्मि कर्मि को ण सा डि ल कर्मि ॥
॥ धर्मि धर्मि वास नानास्ती धर्मि ॥
॥ चर्मि चर्मि सर्व दां वास चर्मि ॥
॥ वर्मि वर्मि चुकले लोक वर्मि ॥ ८
॥ दक्षा दक्षा वो ळ स्वा दक्ष दक्षा ॥
॥ पक्षा पक्षा [illegible] पु वे पक्षा ॥
॥ ल्ल [illegible] ल्ल [illegible] ण लक्ष ल्ल
क्षा ॥ रक्षा रक्ष [illegible] सि न मा क्षी
॥ रक्षा ॥ ९ ॥ [illegible] क्षा मा ग ण
॥ सर्व मी क्षा ॥ दक्षा दक्षा दक्ष दा
॥ क्षं ण्य दिक्षा ॥ चिक्षा चिक्षा भक्ति
॥ मा गे चि चिक्षा ॥ सिक्षा सिक्षा रो
॥ क डि सा सिसी क्षा ॥ १० ॥ हरि क
॥ थे सि च उ ठ त जा वें ॥ सज्जन सं
॥ ग ति झु ठ त जा वें ॥ निरुपणि म
॥ न बुड त जा वें ॥ चउ क च च क
॥ कु ड त जा वें ॥ ११ ॥ परसु खा व
॥ रि सि ज त जा रे ॥ शउ री पु बरि
॥ रि ज त जा रे ॥ हरि गुणा व रि रि
॥ झ त जा रे ॥ विवरणे मन मी जत
॥ जा रे ॥ १२ ॥ सिण ल सा परि ला ज
॥ त स्का जा णा ॥ आहं मति वरवा
॥ ज त जा णा ॥ हरि जे नि मग माग

॥ तज्ञाना॥ हरिरसें करी मागल
॥ ज्ञाना॥१३॥ विवरणें श्रम हरि
॥ तज्ञाहो॥ निरुपणें श्रम सारिल
॥ ज्ञाहो॥ षडरिपु वरि माजलज्ञा
॥ हो॥ बहु जनां मग तारिलज्ञा
॥ हो॥१४॥ कनक कलो कउकें घन
॥ गाजे॥ बहु वाद्यक कोघन गाजे
॥ कविश्र वेद ज्ञनि घन गाजे॥ वर
॥ प्रलाप घनी घन गाजे॥१५॥ व
॥ चनकें करलें उलराया॥ तरलतेल
॥ रले उलराया॥ गौरिवरें चरणे
॥ उलराया॥ श्रमल विवरणें उल
॥ राया॥१६॥ कठिण लापा हाला
॥ रवनाहि॥ निरसीलां न सुरल
॥ वां हि[illegible] म सुरलना
॥ हि॥१७॥ वर[illegible]शायरा ल
॥ रणिचा॥[illegible] बहु उलरणि
॥ चा॥ उगम सुगम बेदरणिचा॥
॥ फणि सुतें मसुहाल रणिचा॥१८॥ की
॥ हरिदास हणें विकित्सा भज्ञना
॥ चा॥ चुकलसे बहुतला भज्ञना
॥ चा॥ बुउवि लोप्यमलोभ ज्ञना
॥ चा॥ ज्ञन रिपु जन शोभ ज्ञनाचा
॥१९॥ हरिजना हरिदास रसावा
॥ हरिजना भजना सरसावा॥ जि
॥ चनिच्या जिवनि सरसावा॥ हु
॥ कीलां न दिसे सरसावा॥२०॥ ह
॥ रिरसें सरसे चितरावा॥ हृदये
॥ भौंति वरि चिरांवा॥ तनुमनु हरि
॥ च्या चितरावा॥ भव समुद्र बळे
॥ चितरावा॥२१॥ ज्ञळकतिनभी

Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

(४)

।। चे वर तारे ।। धृवादि सकळा वर
।। तारे ।। २२ ।। बहु जना जन नाहि
।। लवारि ।। बहु जना मज नाहि लवा
।। रि ।। बहु श्रमा श्रम हाहि वारि ।। ब
।। हु मना सम ताहि लवारि ।। २३ ।।
।। रुण सुणि सकळां वर पावा ।। सु
।। मन तो वर तो वर पावा ।। मक्हिम
।। जने वर पावा ।। सुरस हिगा रस
।। हि वर पावा ।। २४ ।। इपट ति जन
।। हे वर माने ।। इतर तो समजे वर
।। मानु ।। चतुर तो समजे वर माने ।।
।। पगले ठहिण जी वर माने ।। २५ ।।
।। उठविले किति कगजराणे ।। बस
।। विले किति के गडा [illegible] ने ।। समज
।। ति गति ति [illegible] ।। घउ विदि
।। जन म [illegible] ने ।। २६ ।।
।। सु हु ल सु [illegible] फळ मोटे ।। उ
।। दरि चे कुमर फळ मोटे ।। लरुव
।। सीम ल लफळ मोटे ।। कण किचे
।। सी जेल्हें फळ मोठे ।। २७ ।। विहरि
।। ला धरि तो नर मोठा ।। वाहातसे
।। कण तो नर मोठा ।। की तो करि रिवे
।। नर मोठा ।। सकळि कानि चविनर
।। मोठा ।। २८ ।। ठणकल्मा वरि तो र
।। गडि तो ।। शुक बहु कण तो रगडि
।। तो ।। वनचरु पशु तो रगडि तो ।।
।। रण भुमि सगळा रगडि तो ।। २९ ।।
।। वचन हे जन हो परिसा रे ।। पिल
।। लो हो गुण हा परिसा रे ।। घन बहु
।। त चिर परिसा रे ।। न पिकति सिके
।। लि परिसा रे ।। ३० ।। चला चला रे हा
।। रि तो निघाला ।। माचे बचे रे चढ

Joint project of the Rajwade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

॥ उनि घाला ॥ कैं सावरि हा घालिल
॥ घाला ॥ त्यासंगति ने पुछणि आघा
॥ ला ॥ ३१ ॥ गोपाळ ह्मण ति घालु हा मा
॥ मा ॥ दोहु चल्ला रे गाइ घमा मा ॥ व
॥ ळति करा रे सागा ल मा मा ॥ लोरे
॥ तनु चा करि ति र मा मा ॥ ३३ ॥ घा
॥ उनि तोडि कपि लोक ठाण ॥ खाउ
॥ नि पाहे सम जे फुटाणे ॥ वाले चिने
॥ ले आंब घे च टाणे ॥ बदरि फळाचे
॥ घे लो ग भाणे ॥ ३४ ॥ पाहा ब रसे
॥ आर्धी तुटेरे ॥ तुटोनि सिंके मड
॥ कं फुटेरे ॥ कीं ते कघागि बहु सा
॥ न टेरे ॥ घावोनि जालां तग ओप
॥ टेरे ॥ ३५ ॥ आपुले जाले न व्हतं
॥ नि - मिरा ॥ [illegible] नेगल्याभ
॥ घ्य [illegible] शा ॥ उ र
॥ ली खराते [illegible] मिरा ॥ वि
॥ रपजाल्मा [illegible] मिरया ॥ ३६
॥ वति लावि सीगो माथि उमाज़ि ॥
॥ घरात [illegible] वि बहु साल भाजी ॥
॥ उदं उदारि बसलि सभाजी ॥ मा
॥ ध्यान जाले पाहुणे न भाजि ॥ ३७
॥ वंहुनि आधीं वर मोरयारे ॥ लोभ
॥ ली भावे कारि तोरयारे ॥ तेणे गु
॥ उतर मोरयारे ॥ हा ते बहु साधे
॥ कता चयारे ॥ ३८ ॥ हंसा स निसु
॥ दंर त विराजे ॥ घ्यालि जयात्ला व
॥ हु साल राजे ॥ आधें लिरि ते मधु
॥ रा गि राजे ॥ आपठित माया चि
॥ द्दा वराजे ॥ ३९ ॥ बरा घसये गंधि
॥ चा आर्ष काटा ॥ घसंगी तुळी गर
॥ भी चा आर्षि काटा ॥ करि मा कळि

"Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai."

(१०)

॥ ग्रथिचा आर्थ काढा ॥ परंतीन य
॥ ग्रंथिचा आर्थ काढा ॥ ४० ॥ निसिम
॥ घ्य आगी जाणे उलराया ॥ दिसति
॥ जे छि साबहु साल तारा ॥ दुग्धा
॥ धरिलो बंसं तलारा ॥ नौ काकराया
॥ हाउ कासु तारा ॥ ४१ ॥ रुषि गौतु
॥ मे श्रापिलि दिव्य बाळा ॥ वनामा
॥ जी हो सिलतुं चंड सिळा ॥ कृपाआ
॥ की तो शब्द बोले दयेसिं ॥ ह्मणे रा
॥ घवाचे पंदि मुक्त हो सि ॥ ४२ ॥ आ
॥ हिं ल्या सिळा तव निवाउ पाहे ॥ स
॥ दी सर्व दानाम विं तिल आहे ॥ मला
॥ काळ आला ह्मणे दैन्य बाणी ॥ कृपा
॥ बु पणें कां न ये राम राणा ॥ ४३ ॥ व
॥ नामा त्रि स इ ल [illegible] राम का जा ॥ प
॥ दिं ला [illegible] टल मा झा ॥
॥ दिनानाथ तो [illegible] ला आ नारि
॥ चा ॥ कुळ [illegible] आ नाथा दि ना
॥ चा ॥ ४४ ॥ रघुनायका विणकि ति
॥ सिणावें ॥ वनाद्दारुण मा जी कैसें
॥ राहवें ॥ रुशी सर्व जाति सितासें
॥ वरासि ॥ रघुराज यइल ये पें चि
॥ पंथें ॥ ४५ ॥ बहु कहल्लि शब्द का
॥ रुण्य बोले ॥ पुढें सव राभाग्य तिचे
॥ उदेलें ॥ रुशी सर्वे हि राम घेउनि पे
॥ गें ॥ निघाले वनासी ग्र चपें चि मा
॥ गें ॥ ४६ ॥ पुढें राघवें देखीली चं
॥ ड सिळा ॥ पंदि लाग ता जा हाल्लि
॥ दिव्य बाळा ॥ आहिल्या सिळा मुक्ति
॥ होउनि गेल्ली ॥ तीने राघवा चि बहु
॥ स्तुति केलि ॥ ४७ ॥ आसें रव्याद ळो
॥ चा आचार्य ळाचा ॥ वदे सस वा

Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

(11) ॥१०॥

॥चा जपु सासि वस्चा॥ कोंवसादि
॥नाचा गुणि सज्जनाचा॥ प्रभुरा
॥महादेव ब्रह्मादिकाचा॥४८॥
॥बहु राज्य धारि जनासौख्यकारि
॥नव्हेलो विकारि गुणि येकनारि॥स
॥दांसस वादिभ्यास यास खेदि॥ब
॥हु दुव्हेलो दुर्जनाचो विरोधी॥४९
॥बहु वृष्टी नाहिं अनावृष्टी नाहिं॥
॥कदाहि भुमि पिकसाडितनाहिं॥
॥जनारंड नाहि तथा मृत्यु नाहिं॥
॥जरा मृत्यु नाव्याधी काहि चनाहिं
॥५०॥ पाहावं दूरि बंद कोणा भासे
॥ना॥ जनिमछरूप पाहालां हि दिसे
॥ना॥ कुरूपि जसे शद्रकापठ्य
॥— काहि [illegible] का [illegible] वादवेवा
॥दनाहि [illegible] दुःखानं द
॥भानंद तुल्य [illegible] बाट॥ मोहा
॥सुदुति [illegible] ठ मोठे॥
॥बराकोल्हपाळिआसा कोणके
॥चा॥ जगि धंन्य हा राम दाला
॥दिनाचा॥५२॥ सदा सर्वदां न्या
॥यछान्याये नाहि॥ नसे हो भुमि
॥वासउदास कांहि॥ जगजन
॥कुरामराज्ञा स्वभावं॥ झण
॥दासरायासि कल्याण व्हावें॥
॥५३॥ ध्वजा गोपुरें सीखरें धमे
॥शाळा॥ भुयरि घरें विवरें होम
॥शाळा॥ वस्या बज्या बोवज्या
॥सुंदराची चशाळा॥ विचित्रा
॥बहु बांधल्या धर्मशाळा॥५४॥
॥बहु सुंदरा स्थापिल्या विद्यमा

"Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai."

॥ ति ॥ महिमंडळि धन्य रे धन्य
॥ कीर्ति ॥ बहु लेंसि वाळे बहुता
॥ परिचि ॥ बहु देव देवाल्ये कुस
॥ रिची ॥ ८५ ॥ बने पोफळि कर्दळि
॥ नारिकेळि ॥ वने आंबळि जांब
॥ ळि रम्य वोळि ॥ बहु वृक्ष याति
॥ बहु पक्षयाति ॥ बहु कुपवावित
॥ ळि बाघ जाति ॥ ८६ ॥ वने पावनं
॥ जीवनें भुवनें ते ॥ सुखे गामुखे र
॥ म्य वृंदावने ते ॥ तिरें सुंदरें बांध
॥ ले सारवोटे ॥ आकस्मात दे
॥ खतां सोरम्य वोटे ॥ ८७ ॥ बहु
॥ अन्नदाने बहु वस्त्रदाने ॥ बहु
॥ तोयदानें बहु [illegible] दाने ॥ बहु
॥ रत्नदाने ब[illegible] दाने ॥ बहु
॥ ता पा[illegible] हु सत्कदा
॥ ने ॥ ८८ ॥ धे[illegible] ते मने इच्छ
॥ रिं सर्व वे[illegible] धन्य लोको
॥ त्तरिं किर्ति ज्याचि ॥ विशाळें स्थ
॥ ळें देउळें ते उदासें ॥ समुद्रें स्वरु
॥ पा हिलाराम दासें ॥ ८९ ॥ किति
॥ लोक ते लोक नानाविकारि ॥
॥ कीतियेक ते नामसि दुःखका
॥ रि ॥ कितियेक ते लोक नाना
॥ गुणाचे ~~कितियेक ते लोक ब~~
॥ ~~नानामु~~खाचे ॥ कितियेक ते हि
॥ ण जाले हिणाचे ॥ ९० ॥ कितिये
॥ क आले किति येक गेले ॥ किति
॥ यक ते स्वार्थ कर्तीचि मेले ॥ किति
॥ योग यागि किति भोग सागि ॥ की
॥ तियक ते विलरागि विरागि ॥ ९१
॥ पुरें पठणें हाट बाजार पेठा ॥

" Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai. "

॥ बहु वस्ती नाना परि राठखेठा ॥
॥ वनें जीवनें भुवनें कुपना वि ॥
॥ मति चिगदि ते कितिआठवा
॥ वी ॥ ६२ ॥ कितियक ते भुवनें जा
॥ उजाडें ॥ कितियक नाना परि वा
॥ उवाडें ॥ कितियक ते मानुविसी
॥ घर केली ॥ परि सेवटिं सर्व भंगो
॥ नगली ॥ ६३ ॥ घडे यक ये कि कडे
॥ सर्व मोडे ॥ घडे यक ये कि कडें स
॥ र्व वाटे ॥ कितियक नाना परि हो
॥ त जाले ॥ पुढें सेवटिं सर्व पावेल
॥ याते ॥ ६४ ॥ पंथी चालतां सुख
॥ दुःख वाटा मानवें ॥ मर्हिं मळि काय
॥ कीर्ति पाहावें ॥ [illegible]
॥ नाना परिचें ॥ [illegible] होत जातें क
॥ ळा कुसरि [illegible] गुण विण पा
॥ विजे [illegible] ॥ विवे
॥ की विश्रा [illegible] ॥ क
॥ ळोदे क ळोद मना नि वळोदे ॥ ग
॥ ळोदे ग ळोद आहे तो गळोदे ॥ ६६
॥ कळाया कळा निवळाया मनाला ॥
॥ पुसावें घडि ने घडि सज्जनाला
॥ बरि वेळ जाणे बरा काळ जाणे ॥
॥ प्रसंगि दया सर्व हि सुख बाणे ॥
॥ ६७ ॥ नसे भक्ति ना ज्ञान ना ध्यान
॥ कांहिं ॥ नसे प्रेम हें राम विश्राम
॥ नाहिं ॥ असा दिन अज्ञान मि
॥ दास तुझा ॥ समर्था जनि घेतला
॥ भार माझा ॥ ६८ ॥ रघुनायका
॥ जन्म जन्मांतरिचा ॥ अहं भाव
॥ छेदु निठाकि दिनाचा ॥ जनि
॥ बोलति दास या राघवाचा ॥ प

Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

॥रि आंल रिले हा नाहि लयाचा
॥६९॥ दिनाचे गुणें दीसतो ला
॥ज कोणा॥ जनि दास तुझा दि
॥से दैन्यं वाणा॥ सीरि स्वामि तु
॥रामपुर्ण प्रतापि॥ तुझा दास प
॥हे सदा सीघ्र कोपि॥७०॥ रघुना
॥यकाही न हा लिंघ रावें॥ ब्याहे म्हा
॥वहो दुनियां उद्धरावें॥ आ गुणि
॥ लयालागि गुणि करावें॥ समर्थे
॥भवसागरि उतरावें॥७१॥ कि
॥तिभार घालु रघुनायकाला॥
॥ मज कारणे सिण होइल साला॥
॥दिनानाथ हा संकटि धांव घाली
॥ लयाचे नि हे सर्व कायानिवाली॥
॥७२॥ मन [illegible] राम केवल्य
॥दाता॥ [illegible] हि तुलि स
॥वे संसार चि [illegible] ॥ समर्थाल
॥या काय तु [illegible] वें॥ सदा स
॥वेदा नाम वाचे वदावें॥७३॥ हा
॥वायान ले बाण मांडिआनं ले॥
॥बळें सोडिलं जाति आकाश पंथें
॥बतिला गलां वेळ नाहि उडाया॥
॥ लयाचे परि स्फुर्ती दे देवराया॥
॥७४॥ वरि पाहालां दृष्टी हे दुरि
॥थावें॥ लयाचे सवें कल्प नाहि
॥उठावें॥ उठे मारुति वेळ नाहिं उ
॥डाया॥ लयाचे परि स्फुर्ति दे दे
॥वराया॥७५॥ फिरे वावरे बाल
॥ संचित जैसा॥ चळेळेनि वळे
॥हि कल्पहि तैसा॥ धरि तो बळें
॥संधी नाहि धराया॥ लयाचे प
॥रि स्फुर्ति दे देवराया॥७६॥ वि

Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai

॥ वेकें विवंचुनि यांला गवेगें॥ प
॥ ळे सर्व हि दृष्य सांडुनि मागें॥ उ
॥ पायें चितो ज्ञायत्ले घुनि माया॥
॥ त्याचे परि स्फुर्ति देदे व राया॥
॥७७॥ निंद्रुनि सिंधु बुडसी तळा
॥ थी॥ सेवुनि सोनधरिसिल्ले मा
॥ ति॥ ऐसा प्रपंचि भुलला सि का
॥ मा॥ सांडुन रामा फिरसि रिका
॥ मा॥७८॥ प्रसंगें स्वप्मावें चिलो
॥ लोलव्याला॥ परि पाहालीन्या
॥ यगेलाबुडाला॥ घनेगोघनेकां
॥ चनेघाववाजी॥ परि पाहालां
॥ नाडले लोक कांजि॥७९॥ विके
॥ सेतरे हेलतेचें ची लाग॥ पीकेना
॥ तरिं चितरंगे वि[illegible]॥ त्याचे परि र्प
॥ सार विचार[illegible]पे कर्मो नि
॥ रापणिवर्षे[illegible]॥८०॥ प्रभु
॥ आमुचा र[illegible]वासि॥ सु
॥ वर्णाचवळा माडि नाना विलासि॥
॥ पुरिसी विमानात बैसोनि गला
॥ कपिदास तोहि चीरंडि वकेला॥
॥८१॥ पाहाणं पाहाणें साहाणें वा
॥ हाणें॥ बोलणें चालणें हालणें उ
॥ लणें॥ साघणें बाघणें शोघणें ने
॥ णणें॥ ज्ञाणणें बाणणें डोलणें मि
॥ पणें॥८२॥ परपंकजी शठप
॥ दिं वृत्ति रंगे॥ बहुरंग त्ति सज्ज
॥ नाचे निसंगे॥ सुखें पाहातां पागु
॥ ळचि निडांगें॥ गुणि गुंतल्ले नि
॥ ज्ञयो गें परागें॥८३॥ पुढें काय
॥ होणार तें हि कळेना॥ पाहा मेउ
॥ कोशास कांहिं मिळेना॥ बरें वो

Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

(16)

॥खरें सोसिति लोक डीति॥
॥परि पोळला तुं न केलि फजिति
॥८४॥ परम सुंदर सुमन माळि
॥का॥ परम सुंदर सुजन काळि
॥का॥ परम सुंदर ले वनमाळि
॥का॥ बहुत लोकपि करतालिका
॥८५॥ परम कोमळ राम कठिण
॥कां॥ दिन दयाळ्या तु मजे चिकां
॥मज बहुत उदासिन वाटलें॥न
॥धरि तां नयनिं निरलोटलें॥८६॥
॥पतित पावन तुं जन पावना॥प
॥तित पावन सज्जन जिवना॥प
॥तित पावन पावन पावना॥जन
॥रहित राहिमिर [illegible]॥८७॥फ
॥सों [illegible] पुसुन [illegible] सोचि डे सा
॥पसों वतं ग [illegible] पसोचि
॥ले सा॥ न [illegible] वसों हसों
॥गमे लो॥ पिसों [illegible] खउ थीसों
॥गी सोन व्हे लो॥८८॥ बहु पाप हो
॥ता चि दारिद्र येते॥ बहु पुंण्य हो
॥ता चि तें भाग्ये होतें॥ बरें कोण
॥माने ल तैसें करावें॥ मनि धोर
॥याहुनि हा ति धरावें॥८९॥ बिजे
॥विण अंकुर निर्माण जाला॥तु
॥जे विण लोयकला ला चि गेला॥न
॥रे विण छ्याया या क्रमे विण माया॥जे
॥ळे विण तारुवि वेकें बुजाया॥९०
॥ बरें दुग्ध ते मद्य पाचिं कुपाचीं॥
॥ पुढें देखलांतें न जावें चि श्वाचीं॥
॥ जरि ज्ञान जालें जनि निचयाति॥
॥ तरिं ते न व्हे वेद्य कां हि महंति॥९१॥
॥ बहु बोलते फोल का टाळ वाणें॥

Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

॥ जयाशांति नद्रांति ते हिनजाणे ॥
॥ बहुक्रोध या खेद होइल कैचा ॥
॥ जळो ते जीणे लेश नाहि सुखाचा
॥ १२ ॥ बरी शाक ले भुक्ति मुक्ति
॥ चि ॥ रुचि चोखडि निगुडि चे कढि
॥ चि ॥ करि लौकरि भाकरि भात भा
॥ ल भाजि ॥ पुढें ती खरें लोणचें त
॥ क भाजि ॥ १३ ॥ बहु नेणत्याचें ब
॥ हु दक्ष होतां ॥ बहु दिस या लाग
॥ ति ज्ञान घेतां ॥ बहु काळ गेला
॥ बहु दक्ष जाला ॥ अकस्मात लो
॥ दक्ष होउन मेला ॥ १४ ॥ बुही हा
॥ ल बाजी दुन याद्दाल बाजी ॥ की
॥ न्होरे न वा जीरखावे रगाजी ॥ बु
॥ न्हा व खव [illegible] नि मातडा खा ॥
॥ न हि खचें प [illegible] गा ले इ लाखा
॥ १५ ॥ ब्रं [illegible] ले प्रध्यान रं
॥ गि ॥ लो हास हांसु लभ मक्ति संगि
॥ ज्ञाणें कव्याभ्यांतर पावगे वि ॥ दे
॥ खोनि यां राघव लिघ्र से वि ॥ १६ ॥
॥ नद्रि शो भे राम लीं वन्य खाणिं ॥
॥ पुढि माता बाण कोदंड पाणि ॥
॥ वा मेसी ता दक्षणें श शा बंधु पा पु
॥ ढें उभा मारुति विरसींधु ॥ १७ ॥
॥ माहापातकि वाल्हा लागला से
॥ उठे भाव त काळ हा काळ भा
॥ से ॥ नव्हे योग हा रोग भोग स्व
॥ रुपि ॥ नव्हे आप हें पाप संताप
॥ रुपि ॥ १८ ॥ मला लागलां उच्छा
॥ मि हच्छा जाली ॥ परि सर्व चिंतां
॥ क सुखी निवालो ॥ मां हा तक स्वा
॥ धी व्हावें शक्के नये ॥ तयामान विजी

Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

(18)

॥ च हा काय जाणे ॥ १९ ॥ मनां ति ल
॥ ज्ञाणें आसा कोण आहे ॥ कासें
॥ काय देंस र्वे शोधु नि पाहे ॥ कि
॥ त्तिं यक तपा हा लां ग्हि केले ना ॥
॥ कि त्तिं ये क तें चित चीतिं मिथ्ये
॥ ना ॥ २०० ॥ मां हा मुखें नांहि आर
॥ त्रिं पर त्रीं ॥ सदां घा लला कुं जलो रे
॥ हयें त्रीं ॥ सदां चा करें हा आखं
॥ डित लाटा ॥ त्या लागि नाहि तें रे
॥ स्वर्गवाढा ॥ १ ॥ मदेंनार देइ छिलें
॥ गोपि केसि ॥ लेणें नार दि जाग्ले
॥ सिघ्र केसि ॥ कु विद्य करिं आंतुरि
॥ सुखवोठे ॥ त्या साठि सं च छ
॥ र पु त्र जोटे ॥ २ ॥ मां हा भाग्य वै
॥ राग्य हें [illegible] नी [illegible] ॥ घडे त्याग
॥ हा [illegible] लो [illegible] सि ॥ लया
॥ चि ण हें ज्ञा [illegible] न्य वोणें ॥
॥ क्रिये विण [illegible] कला जि र वा
॥ णें ॥ ३ ॥ मां हा [illegible] केडी व पा शा
॥ ण ज्ञा ले ॥ वस चिन से त की लीं
॥ काळ गेले ॥ स्फु ति वि ण कोणास
॥ कोणि न पावे ॥ त्या रा म ला रि ले
॥ पेच्या स्वभावें ॥ ४ ॥ मना साधना
॥ चि न से व ध नारे ॥ धना बाधना
॥ चि न को भाय नारे ॥ जना कांच
॥ नाल्गा गि घी त मो टि ॥ सरे नाक
॥ रां काम ना कल्प को टि ॥ ५ ॥ मि
॥ ध्या भासें आं त रि घा कसुटे ॥ घा
॥ के धाकें स र्वेदा घा ण फुटे ॥ स्वप्ना
॥ कारें भोद रें बोस णे ता ॥ जागा हो
॥ तां धाक सां डु न जा तो ॥ ६ ॥ मा
॥ नें मानें चाल ति स र्व मानें ॥ या
॥ नें यानें चालवि ति गु मानें ॥ हा

Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com